प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, कु. वनिता निवृत्ती वीरकर ने एम. फिल. उपाधि के लिए यह लघु-शोध प्रबन्ध मेरे मार्गदर्शनमें लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। पूर्व योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है। जो तथ्य इस प्रबंधमें प्रस्तुत किये गये है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

निर्देशक,

प्राचार्य,

डॉ. बी. बी. पाटील,
महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर।

स्थल :- कोल्हापूर.

दिनांक :- / /१९९१ ।

पा
कल
डा
ग

[सुनीता]

भूमिका

बी. ए. का इम्तहान देनेके बाद मैं मेरे मामाजीके गाँव गई थी। उस छोटेसे देहातमें मुझे पंद्रह दिन रहनेका मौका मिला। उन पंद्रह दिनोंमें मैंने वहांके लोगोंका अभावग्रस्त जीवन, आपसी झगड़े, द्वेष-कलह, गाँव की व्यवस्था, अलग-अलग जातियोंके जीवन-यापन के हरएक पहलूको देखा था।

एम. ए. में हमें प्रेमचन्दजीका "गोदान" ग्रामजीवन पर आधारित उपन्यास पढ़ाई के लिए लगाया गया था, जो मुझे बहुतही पसंद आया था। क्योंकि गोदान का नायक "होरी" का चरित्र भारतीय ग्रामीण किसान का यथार्थ चरित्र है। अत: जब एम. फिल. की उपाधि के हेतु लघु-शोध प्रबंध के लिए विषय चुनने की बात आयी तो मैंने मेरे निर्देशक के सामने ग्रामीण जीवन पर शोधकार्य करनेकी इच्छा प्रगट की। मेरे निर्देशक भी तुरंत तैयार हुए और मैंने " प्रेमचन्द की कहांनियोंमें चित्रित ग्रामीण जीवन" यह विषय तय कर इस विषय पर कार्य प्रारंभ किया।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंधको कुल पाँच अध्यायोंमें विभक्त किया गया है।

1] पहले अध्याय में कृषक जीवनके लेखक प्रेमचन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व में उनका जन्म, बचपन, परिवार, शिक्षा, नौकरी, विवाह, रिश्तेदार, मित्रपरिवार, साहित्यिक प्रेरणा आदि का चित्रण करते हुए उन्हें अपने जीवनमें कौन-कौनसी कठिनाईयोंका सामना करना पड़ा और अंतमें किस बीमारीके कारण उनकी मृत्यु हो गई इसका चित्रण किया गया है।

2] दूसरे अध्यायमें प्रेमचन्द युगीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक परिस्थितियोंका परिचय देते हुए इन परिस्थितियोंका प्रेमचन्द के साहित्यपर किसतरह प्रभाव पड़ा इसका चित्रण किया है।

3] तीसरे अध्यायमें प्रेमचन्द की कहांनियोंमें ग्रामीण जीवनका यथार्थ चित्रण

प्रस्तुत करते हुए "ग्राम" शब्द के अर्थकी व्याप्ति और वैदिक कालसे लेकर अंग्रेजी शासन कालतक के ग्रामोंके इतिहास को स्पष्ट करते हुए प्रेमचन्दकी कहानियोंमें चित्रित ग्रामीण जीवनमें शोषणके विविध रूप, परिवार, नारी चित्रण, वहां के लोगोंका अज्ञान, आपसी-झगड़े, धर्म का पाखंडी रूप, जातिभेद, तंत्र-मंत्र, झाड़-फूंक, दुआ-तावीज, पूजा-पाठ, तेवार, भूत आदि के प्रति अंधविश्वास, तथा ग्रामीण समाजमें बिरादरी और पंचायत व्यवस्था का महत्व आदि का विश्लेषण किया गया है।

४] तो चौथे अध्याय में उनकी कहानियोंमें चित्रित विधवा समस्या, वेश्या समस्या, दहेज प्रथा की समस्या तथा अनमेल विवाह की समस्याओंका चित्रण करनेका प्रयास किया गया है।

५] उपसंहार के अंतर्गत प्रेमचन्द, युगीन तत्कालीन परिस्थितियाँ, उनकी कहानियोंमें ग्रामीण जीवनका यथार्थ चित्रण और कुछ समस्याओंके बारेमें जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं उनका उल्लेख किया गया है।

अंतमें उपसंहार के साथ संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ और सहायक ग्रंथोंकी सूची दी गई है ।

=x =x =x =x =x =x =x =x =x =x =x

श्री
प
सि
द्ध
अ

ऋ ण नि र्दे श

जीवनमें कुछ क्षण ऐसे होते हैं, जिनसे उऋण होना संभव नहीं होता और न होनेकी इच्छा ही होती है। इसीतरह का ऋण मुझपर मेरे श्रध्देय गुरुवर्य प्राचार्य डॉ. बी. बी. पाटीलजी की कृपा का है। उनके आत्मीय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफलन यह प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध है। यह प्रबंध उनके आशीर्वाद एवं कृपापूर्ण सक्षम निर्देशनमें लिखा गया है इसे मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ। सातत्य पूर्ण व्यस्तताके बावजूद भी आपने निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मुझे कभी हतोत्साह होने नहीं दिया। आपके आत्मीयपूर्ण निर्देशनने इस शोधकार्य के अंतर्गत मेरी घरेलू निजी कठिनाईयोंको भी कभी अनुभव नहीं होने दिया, बल्कि आपसे मुझे हर बार नया उत्साह मिलता गया। अत: आपके ऋणसे मैं उऋण होना नहीं चाहती, क्योंकि आपकी सहृदयताको आभारके चन्द लब्जोमें बाँधकर मैं सीमित नहीं करना चाहती, परंतु आपकी इस कृपा का एहसास मुझे जीवनमें हमेशा रहेगा। आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद की मैं सदैव अभिलाषी रहूँगी।

आदरणीय प्रा. कणबरकर, प्रा. मोरे, प्रा. वेदपाठक, प्रा. तिवले, प्रा. द्रविड, प्रा. हिरेमठ, प्रा. लवटे, प्रा. सौ. जैन, प्रा. कु. भागवत का आशीर्वाद और प्रेरणा सदैव मेरी साथ रही अत: उनके प्रति मैं सविनय आदर प्रकट करती हूँ।

साथही राजा शिव छत्रपति कला और वाणिज्य महाविद्यालय, कानडेवाडी के अध्यक्ष बाबा कुपेकरजी और इस कालेजके सभी प्राध्यापक जिन्होंने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहन दिया उनके प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

महावीर महाविद्यालय की ग्रंथपाल सौ. एल. जे. गद्रे और कु. दुगे, श्री. घाटगे इन्होंने मुझे समय-समय पर ग्रंथ देकर सहायता की है, अत: मैं उनके प्रति भी आभारी हूँ। साथही शहाजी कालेज और शिवाजी विश्वविद्यालय के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

जिंदगीमें बहुत हादसे होते हैं। उनमेंसे एक हादसा मेरे पिताजीका स्वर्गवास। उनकी इच्छा तथा प्रेरणासेही आज मैं एम. फिल. तक की पढाई पुरी कर

सकी हूँ। मेरी माता, बड़े भाई सुहास, शरद, राजू, बहन नूतन, मेरी सहेली हालीमा करीमा और उनका परिवार इन्होंने इस प्रबंध लेखनके दौरान मेरी बहुत मदद की है, जिसका बयान मैं कभी नहीं कर सकती।

इस प्रबंध की पूर्तिमें जाने-अनजाने में सहायता करनेवाली मेरी सहेलियाँ और वर्गमित्रों तथा हितचिंतकोंने सामग्री संकलनमें मुझे निःस्वार्थ सहयोग दिया उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

इस लघुशोध प्रबंधको टंकलिखित करनेका कार्य मैंने खुद [कु. वनिता नि. वीरकर] किया है। प्रबंधको जिल्दसाज चढ़ानेका काम श्री. उदय गायकवाडने बड़ी आत्मीयता से किया है, उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ। प्रबंधके अंतरीक भाग को सुशोभित करनेका काम मेरे बड़े भाई राजू ने किया है।

अंतमे मैं इस कृतिमें होनेवाली त्रुटियोंको स्वीकार करते हुए यह लघु-शोध-प्रबंध आपके अवलोकन के लिए प्रस्तुत करती हूँ।

कोल्हापूर

आपकी कृपाभिलाषी

दि. ७।८। १९९९ ।

[कु. वनिता नि. वीरकर]

x=x=x=x=x=x=x=x=x

विषयानुक्रम	पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन — १-2

ऋणनिर्देश — १-2

अध्याय पहला :- कृषक जीवनके लेखक प्रेमचन्द । — १-१७

अध्याय दूसरा :- प्रेमचन्द युगीन परिस्थितियाँ । — १-23

१] राजनीतिक परिस्थिति ।

२] सामाजिक परिस्थिति ।

३] धार्मिक परिस्थिति ।

४] आर्थिक परिस्थिति ।

५] साहित्यिक परिस्थिति ।

अध्याय तीसरा :- प्रेमचन्द की कहानियोंमें ग्रामीण जीवनका यथार्थ चित्रण । — १-९०

१] १] "ग्राम" किसे कहते है ?

२] "ग्राम" शब्द का परिचय ।

३] वैदिक कालमें ग्राम ।

४] रामायण-महाभारत कालमें ग्राम ।

५] बौध्द कालमें ग्राम ।

६] गुप्त कालमें ग्राम ।

७] मुगल कालमें ग्राम ।

८] अंग्रेजी शासनकालमे ग्राम ।

पृष्ठ संख्या

२] ग्रामीण जीवनमें शोषणके विविध रूप ।

३] परिवार का चित्रण ।

४] नारी चित्रण ।

५] ग्रामीण जीवनमें धर्म का पाखंडी रूप, अंधविश्वास और जातिभेद ।

६] ग्रामीण समाजमें व्याप्त तंत्र-मंत्र, झाँड़-फूँक, दुआ-तावीज, पूजा-पाठ आदि का चित्रण ।

७] ग्रामीण समाजमें बिरादरी और पंचायत व्यवस्था का महत्व ।

अध्याय चौथा :४ प्रेमचन्द की कहानियोंमें कुछ अन्य समस्यायें । १ - २९

१] विधवा समस्या ।

२] वेश्या समस्या ।

३] दहेज प्रथा की समस्या ।

४] अनमेल विवाह की समस्या ।

उपसंहार - १ - ८

संदर्भ ग्रंथ सूची । १ - ४

आधार ग्रंथ सूची ।

१७५

=x =x=x =x =x =x =x =x =x =x =x